दो कतिवाएं

अरुण आदित्य

संदर्भ

एक दिन सपने में
जब नानी के किस्सों में भ्रमण कर रहा था मैं
गंगा घाट की सीढ़ियों पर मिला एक दोना
चमक रहा था जिसमें एक सुनहरा बाल
मैं ढूंढ़ता हूं इसका संदर्भ
फिलहाल मेरे लिए इसका संदर्भ महज इतना
कि घाट की सीढ़ियों में अटका मिला है यह
पर सीढ़ियों के लिए इसका संदर्भ वे लहरें हैं
जिनके साथ बहता, हिचकोले सहता आया है यह
और लहरों के लिए इसका संदर्भ
उन हाथों में रचा है, जिन्होंने रोमांच से कांपते हुए
पानी में उतारी होगी पत्तों की यह नाव
हाथों के लिए क्या है इसका संदर्भ
वह पेड़, जहां से तोड़े गए थे हरे-हरे पत्ते?
पर यह सब तो उस दोने का संदर्भ हुआ
असल तत्व यानी बाल का नहीं
बाल का हाल जानना है
तो उस पानी से पूछिए
जिसकी हलचल में छिपा है
उस सुमुखि का संदर्भ
जिसका अक्स अब भी
कांप रहा है जल की स्मृति में
दूसरे पक्ष को भी अगर देखें
तो इसका संदर्भ उस राजकुमार से भी है
जिसके लिए सुरसरि में तैराया गया है यह
पर अब तो इसका संदर्भ मुझसे भी है
जिसे मिला है यह
और यह मिलना संभव हुआ स्वप्न में
सो इसका एक संदर्भ मेरे सपने से भी है
इस तरह दूसरों की चर्चा करते हुए
अपने को
और अपने सपने को संदर्भ बना देना
कला है या विज्ञान?

नींद

वो दिन भर लिखती है आपकी गोपनीय चरित्रावली
और उसी के आधार पर करती है फैसला
कि रात, कैसा सुलूक करना है आपके साथ
वो रात भर आपके साथ रही
तो इसका मतलब है, दिन में
बिलकुल सही थे आपके खाता बही
अगर वह नहीं आई रातभर
तो झांकिए अपने मन में
जरूर दिखेगा वहां कोई खोट
या कोई गहरी कचोट
यानी आप खुद हैं अपनी नींद के नियामक
पर कुछ ऐसे भी लोग हैं जिन्हें मुगालता है
कि वे ही हैं सबके नींद-नियंता
समय के माथे पर निशाना साधने के लिए
कुछ सिरफिरे एक खंडहर से निकालते हैं चंद ईंटें और भरभरा कर
ढह जाता है एक ढांचा
जिसके मलबे में सदियों तक
छटपटाती है कौम की लहूलुहान नींद
लाखों की नींद चुराकर एक सिरफिरा सोचता है
कि उसके हुक्म की गुलाम है नींद
और ऐसे नाजुक वक्त में भी
उसके सोच पर हंस पड़ती है वह
कि वही जानती है सबसे बेहतर
कि दूसरों की नींद चुराने वाला
सबसे पहले खोता है अपनी नींद
बेचैनी में रात-रात भर बदलता है करवट
उसके दिमाग पर हथौड़े की तरह बजती है
चौकीदार के डंडे की खट-खट
खट-खट के संगीत पर थिरकती नींद
रात भर गिनती है सिरफिरों के सिर
करती है चौकीदार की सुबह का इंतजार

व्यंग्य

हरिजन को पीटने का यज्ञ

हरिशंकर परसाई

दो समाचार अखबारों में पिछले दिनों छपे। दोनों घटनाएं इन्दौर के आस-पास की हैं। दोनों हमारे गौरव को बढ़ती हैं

इन्दौर के पास एक करोड़ की लागत से एक यज्ञ हुआ। धन्य है! उसी के आसपास एक हरिजन दूल्हा घोड़े पर सवार होकर निकला तो स्वर्णों ने उसे और बारातियों को पीटा। यह भी धन्य है! एक ही क्षेत्र में दो पवित्र कर्म हो गये। हरिजन को पीटना खुद एक यज्ञ है। घुड़सवार दूल्हे को पीटना तो अश्वमेघ यज्ञ है। हरिजनों की बस्ती में आग लगाना राजसूय यज्ञ है।

मैं इन दोनों यज्ञों से खुश हूं। यों कुछ दुष्ट लोग यज्ञ का विरोध भी कर रहे थे। युवा जनता ने तो घोषणा की थी कि वे यज्ञ रोकने के लिये सत्याग्रह करेंगे, पर फ़िर उन्हें समाजवाद से फुरसत नहीं मिली होगी। या शायद संघ से उनका समझौता हो गया हो कि तुम यज्ञ में सहायक बनो और हम दूर कहीं नारे लगायेंगे। मन्त्रोच्चारण में नारों से कोई बाधा नहीं पहुंचेगी। समाजवाद की प्रगतिशीलता और यज्ञ वगैरह की जड़ता का सह अस्तित्व हो सकता है। लोग़ों का एतराज था कि एक करोड़ का अन्न, शक्कर, घी आदि आग में झोंक दिये जायेंगे।

देश में जब करोड़ों आदमियों को अन्न खाने को नहीं मिलता, तब ये धार्मिक पाखण्डी उसे आग में झोंकेगे। मेरे ख्याल से यह यज्ञ करानेवाले समय-समय पर परीक्षा करते रहते हैं कि देश का अविवेक औरा पौरुषहीनता अभी बरकरार है कि नहीं। लोग देखते रहे कि हमारा अन्न, घी, शक्कर आग के हवाले किया जा रहा है और वे जय बोलते हैं। यानी लोग अभी अविवेकी और कायर हैं। इन लोग़ों से डरने की अभी कोई जरूरत नहीं है। इन्हें लम्बे समय तक शोषित रखा जा सकता है। यज्ञ में वास्तव में अन्न, घी, शक्कर नहीं जलते, विवेक स्वाहा! बुद्धि स्वाहा! तर्क स्वाहा! विज्ञान स्वाहा!

जो यज्ञ करते हैं वे जानते हैं कि यज्ञ से कोई देवता प्रसन्न नहीं होता। जिन मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है वे अगर संस्कृत से हिन्दी में कर दिये जायें तो प्राइमरी स्कूल की किताब के लायक हैं पुजारी जानता है, भगवान चाहे कहीं और हों मगर मन्दिर में तो कतई नहीं हैं। मुसलमान जानता है कि खुदा कहीं होगा तो मस्जिद के बाहर होगा, यहां तो नहीं है। मगर अपना धंधा इसी में सुरक्षित है कि लोग़ों को विश्वास दिलायें कि यज्ञ से उनका कल्याण होगा। मन्दिर और मस्जिद में की गयी पुकार भगवान एकदम सुनता है। सीधी 'हॉट लाइन' है।

मैंने जब पढा कि यज्ञ और हरिजन दूल्हे की पिटाई एक साथ हुई तो मुझे लगा कि अगर भगवान होता और वह न्यायी होता, तो यह यज्ञकुण्ड में यज्ञ करनेवालों को ही डाल देता। यज्ञ करनेवाले ही स्वाहा हो जाते, यह सबसे ऊंचा नरमेध यज्ञ होता। मगर भगवान भी इस सरकार की तरह विफल गति कायर है, जो नरमेध यज्ञ जमशेदपुर, अलीगढ़ या हरिजन बस्तियों में कराता

इन दिनों यज्ञों की बाढ आयी है, नये-नये भगवान और देवियां अवतार ले रहे हैं। चमत्कार का दावा करनेवाले लोग प्रकट हो रहे हैं। यह अनायास नहीं है। इसके पीछे योजना है। इस योजना का उद्देश्य है जनता को पिछड़ा हुआ रखना, उसकी समझ को वैज्ञानिक न होने देना, उसे अन्धविश्वासी और दक़ियानूस रखना, उसे भाग्यवादी और संघर्षहीन बनाना। कुछ उद्देश्य है कि लोग परिवर्तनकामी न हों, वे सड़ी-गली व्यवस्था से विद्रोह न करें। शोषक-वर्ग ससामान्य जन को बेखटके शोषण करता रहे। यह एक देश-व्यापी षड्यन्त्र है, जिसमें राजनीतिज्ञ, सरमायेदार, बुद्धिजीवी आदि शामिल हैं।

है। क्या यज्ञ में और हरिजन दूल्हे के पिटने में कोई सम्बन्ध है? यज्ञ करने और करानेवाले ऊंची जाति के लोग होते हैं। वैदिक युग में ब्राह्मण ने यज्ञ की तकनीक पर एकाधिकार कर लिया था। तकनीक का मामला है। तब क्षत्रियों ने तत्त्व-चिन्तन से ब्राह्मणों को पीटा। मगर ब्राह्मण उस्ताद हैं। उसने फ़िर कर्म-काण्ड फ़ैलाया और सारे समाज को जकड़ लिया।

बच्चा जब मां के पेट में आता है तभी से पोथी-पत्री और पूजा शुरू हो जाते हैं। आदमी तैयार हुआ तो ब्राह्मण तैयार बैठा है। फ़िर चालू होता है लम्बा सिलसिला-छठी, नामकरण, मुण्डन, कनछेदन, जनेऊ, विवाह-सब में है ब्राह्मण! आदमी मर जो तो तेरहवें दिन ब्राह्मण भोजन करके दक्षिणा ले जायेंगे। आगे जब तक उसका वंश चलेगा, हर साल पितृपक्ष में ब्राह्मण भोजन करेगा उसी के नाम और दक्षिणा ले लेगा। हरिजन दूल्हा यज्ञ के कारण ही पिटा। यज्ञ तथा इस तरह की दूरी चीजें इसीलिए करायी जाती है कि समाज उन्हीं पुरानी परम्पराओं में जकड़ा रहे। उसी भेद-भाव को माने, जाति-भेद माने, ऊंच-नीच माने, अन्धविश्वास में जकड़ा रहे। यज्ञ करने और करानेवालों का यही उद्देश्य हैकि पिछड़ी हुई रुग्ण मानसिकता बनी रहे, जिससे वर्ण और वर्ग में भेद बने रहें। वही मानसिकता बनी रहे कि हरिजन दूल्हा घोड़े पर बैठे तो ऊंची जाति के लोग भड़ककर कहें-देखो इस 'चमरे'की हिम्मत, हमारे सामने घोड़े पर बैठता है।

कुछ चतुर लोग बड़े काइयांपन से इस सबको सही बताने की कोशिश करते हैं। एक सजन मुझसे कह रहे थे-यज्ञ से विश्व-कल्याण होगा। मैंने कहा-महाराज विश्व-कल्याण होगा अमेरिका और रूस में नि:शस्त्रीकरण सन्धि से। विश्व कल्याण होगा चीन की आक्रामकता रोकने से। विश्वकल्याण होगा शोषण के खत्म होने से, क्या इस यज्ञ का असर जिमी कार्टर और डेंग सियाओ पिंग पर पड़ेगा?

वे कहने लगे-यज्ञ-घूम से वातावरण शुद्ध होता है। मैंने कहा-आपको पता नहीं है कि कारखानों की चिमनियों से निकलनेवाले धुएं ने यज्ञ भूमि को दबा दिया है। इन्दौर की मिलों के धुएं के सामने आपके इस यज्ञ के धुएं की क्या बिसात है। मथुरा में जो तेल-शोधक कारखाना खुल रहा है, उसके वायु-प्रदूषण की रोक के लिये आसपास कितने हजार यज्ञ-वेदियां बनेंगी? उत्तरप्रदेश का सारा घी तो ये यज्ञ-वेदियां भस्म कर देंगी।

इन दिनों यज्ञों की बाढ आयी है, नये-नये भगवान और देवियां अवतार ले रहे हैं। चमत्कार का दावा करनेवाले लोग प्रकट हो रहे हैं। यह अनायास नहीं है। इसके पीछे योजना है। इस योजना का उद्देश्य है जनता को पिछड़ा हुआ रखना, उसकी समझ को वैज्ञानिक न होने देना, उसे अन्धविश्वासी और दक़ियानूस रखना, उसे भाग्यवादी और संघर्षहीन बनाना। कुछ उद्देश्य है कि लोग परिवर्तनकामी न हों, वे सड़ी-गली व्यवस्था से विद्रोह न करें। शोषक-वर्ग ससामान्य जन को बेखटके शोषण करता रहे। यह एक देश-व्यापी षड्यन्त्र है, जिसमें राजनीतिज्ञ, सरमायेदार, बुद्धिजीवी आदि शामिल हैं।

हर कहीं तो देवी-देवता प्रकट हो जाते हैं। गोरखपुर के आसपास के किसी गांव में पार्वती प्रकट हो गयी थीं। सोलह-सत्तरह साल की एक लड़की, जिसके बालों का जूड़ा फ़िल्मी पार्वती की तरह बना दिया गया था, हल्ला कर दिया गया कि यह साक्षात पार्वती है। सोती नहीं है। रात-दिन शंकर का नाम लेती रहती है। खाना नहीं खाती। पानी नहीं पीती। मगर स्वास्थ है। चमत्कार है। श्रद्धालु उमड़ने लगे। पूजा होने लगी। भेंट चढ़ने लगी। खासा पैसा इकट्ठा होने लगा।

अब विज्ञान की आंखें। मेडिकल कॉलेज के तीन डॉक्टर पहुंचे और कहा कि हम उस लड़ी की जांच कराना चाहते हैं। श्रद्धालुओं ने आंखें निकालकर कहा, ''तुम देवी की जांच करोगे? साक्षात पार्वती की जांचकरनेवाले तुम कौन?'' डॉक्टरों ने कहा, ''हमने सुना है कि देवी कुछ खाती-पीती नहीं है, पर टट्टी-पेशाब तो करती होगी। हम उसकी टट्टी-पेशाब की जांच करना चाहते हैं।'' अब देवी का धन्धा करने वालों ने समझ लिया कि पोल खुलेगी। उन्होंने हांका लगाया भक्तों को कि अरे देखो, ये पापी डॉक्टर देवी की टट्टी-पेशाब की जांच करना चाहते हैं, मारो सालों को! आखिर विज्ञान वहां से दूम दबाकर भागा।

यह एक योजनाबद्ध षड़यन्त्र है, जिसे यथास्थितिवादी और पुरातन पन्थी इस देश में चला रहे हैं। पर मुझे यह मझ में नहीं आता कि मेरी बाद की पीढ़ी के लोग ओर कॉलेज के पढे तरुण इस चक्कर में क्यों पड़ रहे हैं? ये तरुण जिन्हें मुझसे अधिक वैज्ञानिक और गतिशील होना चाहिये, जिन्हें परिवर्तन के संघर्ष का नेतृत्व करना चाहिए, जिन्हें विद्रोही की भूमिका निभाना चाहिये वे क्यों अपने बाप के बाप की पीढी को हो रहे हैं। अपनी भ्रामकता और निराशा में कोई रास्ता न दिखने के कारण ही तो ये इस भाग्यवादिता के चक्कर में नहीं पड़ रहे हैं।